रमज़ान में नबी ﷺ का व्यवहार

[*हिन्दी*]

هدي النبي ﷺ في رمضان

[اللغة الهندية]

लेख

डा० आदिल बिन अली अश-शद्दी

د. عادل بن علي الشدِّي

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

ترجمة: عطاءالرحمن ضياء الله

संशोधन

शफीकुर्रहमान ज़ियाउल्लाह मदनी

مراجعة: شفيق الرحمن ضياء الله المدني

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة

الرياض - المملكة العربية السعودية

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

1429 -2008

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

الحمدلله رب العالمين، والصلاة والسلام على نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين.

रमज़ान में नबी ﷺ का व्यवहार

इमाम इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह ने फरमाया :

रमज़ान में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का व्यवहार सब से संपूर्ण, सब से अधिक उद्देश्य की पूर्ति करने वाला और नफ्स पर सब से अधिक सरल था।

इसकी अनिवार्यता २ हिज्री में हुई। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी वफात से पूर्व ९ बार रमज़ान के रोज़े रखे।

जब शुरू में इस की अनिवार्यता हुई तो इस बात की छूट थी कि यदि कोई चाहे तो रोज़ा रखे या हर दिन के बदले एक मिस्कीन को खाना खिलाए। फिर इस छूट को अनिवार्य रूप से रोज़ा रखने में बदल दिया गया।

किन्तु बूढ़ा आदमी या औरत जो रोज़ा रखने की शक्ति न रखते हों उनके लिए यह छूट दी गयी कि वह रोज़ा छोड़ दें और हर दिन के बदले एक मिसकीन को खाना खिलाएं।

बीमार और यात्री के लिए यह छूट दी गयी कि वह रोज़ा छोड़ दें और तत्वपश्चात उनकी क़ज़ा (पूर्ति) करें। यही हुक्म गर्भवती और दूध पिलाने वाली महिलाओं का भी है यदि उन्हें अपने ऊपर भय हो। किन्तु यदि उन्हें अपने बच्चों पर भय हो, तो छोड़े हुए रोज़ों की कज़ा करने के साथ-साथ हर दिन के बदले एक मिस्कीन को खाना भी खिलाएं गी। क्यों कि उनका रोज़ा छोड़ना किसी बीमारी के भय से नहीं था, बल्कि उन्हों ने स्वास्थ्य की हालत में रोज़ा छोड़ा है। इसलिए मिस्कीन को खाना खिला कर उसकी पूर्ति की जाए गी, जैसे कि शुरू इस्लाम में स्वस्थ आदमी के लिए रोज़ा छोड़ने का आदेश था।

अधिक से अधिक उपासना करना:

रमज़ान के महीने में आप ﷺ का तरीक़ा अधिक से अधिक अनेक प्रकार की उपासनाएं करना था। चुनांचे जिब्रील अलैहिस्सलाम रमज़ान में आप ﷺ को कुर्आन का दौर करवाते थे। और जब आप जिब्रील से मिलते थे तो तेज़ हवा से भी अधिक

भलाई के कामों में सखावत करने वाले हो जाते थे। जबकि आप लोगों में सब से अधिक दानशील थे। और सब से अधिक दान शील आप रमज़ान में होते थे; उसमें अधिक से अधिक ख़ैरात करते, लोगों के साथ एहसान करते, क़ुर्आन की तिलावत करते, नमाज़ पढ़ते, ज़िक्र व अज़कार करते और एतिकाफ करते थे।

आप विशिष्ट रूप से रमज़ान में इस प्रकार इबादत करते थे जो अन्य महीनों में नहीं करते थे। यहाँ तक कि आप इस में कभी-कभार लगातार रोज़े रखते थे ताकि इस से आप रात और दिन की कुछ घड़ियों को इबादत के लिए बचा सकें।

जबकि आप अपने साथियों को लगातार रोज़ा रखने से रोकते थे। इस पर लोग आप से कहतेः आप तो लगातार रोज़ा रखते हैं। तो आप उत्तर देते : **"मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ, मैं इस हाल में रात गुज़ारता हूँ।"** और एक रिवायत के शब्द यह हैं कि **"मैं अपने रब के पास होता हूँ वह मुझे खिलाता और पिलाता है।"** (बुखारी एंव मुस्लिम)

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मत पर दया करते हुए लगातार रोज़ा रखने से रोका है, और सेहरी के समय तक इसकी अनुमति दी है।

सहीह बुखारी में अबू सईद खुद्री रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना : **"तुम लगातार रोज़े न रखो, तुम में से यदि कोई लगातार रोज़ा रखना चाहे तो वह सेहरी के समय तक ऐसा कर सकता है।"**

यह मोतदिल तरीन विसाल -लगातार रोज़ा रखना- है और रोज़े दार के लिए सब से आसान भी है। वास्तव में यह रात के भोजन के समान है, किन्तु इसे विलम्ब कर दिया गया है। रोज़े दार के लिए दिन और रात में एक आहार है, यदि उस ने सेहरी के समय उसे खाया है तो समझो उस ने रात के पहले हिस्से से उसे उसके अन्तिम हिस्से में मुन्तक़िल कर दिया।"

रमज़ान के महीने के सबूत में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा :

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह तरीक़ा था कि स्पष्ट रूप से चाँद देख कर, या एक आदमी के चाँद देखने की गवाही मिल जाने पर ही रोज़े का आरम्भ करते थे। जैसाकि आप ने इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की शहादत पर रोज़ा रखा, तथा एक बार एक दीहाती की शहादत पर रोज़ा रखा। आप ने इन दोनों की सूचना पर विश्वास और भरोसा किया, उन्हें शहादत का शब्द कहने के लिए नहीं कहा। अगर यह सूचना देना है तो आप ने रमज़ान में एक आदमी की सूचना पर इकतिफा -बस- किया है, और अगर यह शहादत है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गवाही देने वालों को शहादत के शब्द को कहने का मुकल्लफ नहीं किया। अगर आप

चाँद नहीं देखते और न ही उसके देखे जाने की कोई शहादत मिलती तो आप शाबान के तीस दिन पूरे करते।

अगर तीसवीं शाबान की रात को चाँद देखने में बादल रूकावट बन जाता तो आप शाबान के तीस दिन पूरा कर के रोज़ा रखते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बदली वाले दिन रोज़ा नहीं रखते थे और न ही आप ने इस का हुक्म दिया। बल्कि आप ने यह आदेश दिया कि जब बादल हो तो शाबान के तीस दिन पूरे किए जाएं। और आप स्वयं ऐसा ही करते थे। यही आप एका अमल और आप का हुक्म है। और यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फर्मान : **"अगर बदली हो जाए तो अनुमान लगा लिया करो।"** के खिलाफ नहीं है। क्योंकि अनुमान लगाने का अर्थ है हिसाब करना, इस से अभिप्राय बदली होने की अवस्था में महीने को पूरा करना है, जैसाकि बुखारी की सहीह हदीस में है कि: **"शाबान के महीने की गिन्ती पूरी करो।"**

रमज़ान के महीने से निकलने में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा :

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह तरीक़ा था कि लोगों को एक मुसलमान आदमी की शहादत पर रोज़ा रखने और दो आदमियों की शहादत पर उस से निकलने का आदेश देते थे।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह तरीक़ा था कि अगर ईद की नमाज़ पढ़ने का समय निकल जाने के बाद दो गवाह चाँद देखने की गवाही देते थे तो आप रोज़ा तोड़ देते और लोगों को भी रोज़ा तोड़ने का हुक्म देते। फिर अगले दिन समय पर ईद की नमाज़ पढ़ते थे।

इमाम इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह ने फरमाते हैं :

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इफ्तार में जल्दी करते थे और इस पर उभारते और ज़ोर देते थे। तथा आप सेहरी करते थे और सेहरी करने पर ज़ोर देते थे। इसी प्रकार आप सेहरी में विलम्ब करते थे और उसे विलम्ब करने की रूचि दिलाते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खजूर से इफ्तार करने पर ज़ोर देते थे और अगर खजूर न मिले तो पानी पर। और यह आप की उम्मत पर अत्यंत शफ़्क़त व मेहरबानी और उनकी खैरख्वाही है। क्योंकि तबीअत को मेदा खाली होने की अवस्था में मीठी चीज़ देना उसे स्वीकार करने और शारीरिक शक्तियों के उस से लाभ प्राप्त करने के अधिक योग्य है, विशिष्ट रूप से दृष्टि-शक्ति इस से मज़बूत होती है।

मदीना का हलवा -मिठाई- खजूर है, और उन का मुरब्बा इसी पर है। खजूर ही उन की खूराक और सालन है। और उसका रुतब (ताज़ा खजूर) फल के समान है।

जहाँ तक पानी का संबंध है तो रोज़े के कारण कलेजे में एक प्रकार की खुश्की पैदा हो जाती है और जब पानी से उसे तर कर दिया जाता है, तो उसके बाद खाना खाने से उसे संपूर्ण लाभ प्राप्त होता है। इसी लिए भूखे प्यासे आदमी के लिए उचित यह है कि वह खाने से पूर्व थोड़ा पानी पी ले, फिर उसके बाद खाना खाए।

इस के अतिरिक्त पानी और खजूर में अन्य विशेषताएं भी हैं जो हृदय के सुधार में प्रभावकारी हैं, जिन्हें हृदय विशेषज्ञ डॉक्टर ही जानते हैं।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इफ्तारीः

- नमाज़ पढ़ने से पहले आप इफ्तार करते थे।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इफ्तार -यदि आप के पास उप्लब्ध्द होता तो- कुछ रूतब -ताज़ा खजूरों- पर होता था, यदि आप उसे नहीं पाते तो -सूखे- खजूरों पर इफ्तार करते, अगर वह भी न होता तो चन्द घूँट पानी पी लिया करते थे।
- आप से वर्णित है कि इफ्तार के समय यह दुआ पढ़ा करते थे :

  "ذَهَبَ الظَّمَأُ، وَابْتَلَّتِ الْعُرُوقُ، وَثَبَتَ الْأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالَى"

  ''ज़हा-बज़्ज़मा-ओ वब्बतल्लतिल उरूक़ो व सबा-तल अज्रो इन-शा-अल्लाहो-तआला''

  प्यास चली गई, रगें तर हो गईं, अज्र व सवाब पक्का हो गया यदि अल्लाह तआला ने चाहा। (अबू दाऊद)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''रोज़े दार के लिए इफ्तार के समय एक ऐसी दुआ है जो अस्वीकार नहीं की जाती।'' (इब्ने माजा)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप ने फरमायाः

''जब रात यहाँ (पूरब) से आ जाए और दिन यहाँ (पच्छिम) से चला जाए तो रोज़े दार के इफ्तार का समय हो गया।'' (बुखारी एंव मुस्लिम)

इसकी व्याख्या यह की गई है कि उस ने हुक्मन इफ्तार कर लिया अगरचे उस ने इसकी नीयत न की हो। तथा एक व्याख्या यह भी है कि उस के इफ्तार का समय हो गया, जैसे- **'असबहा'** का अर्थ सुबह हो गई, और **'अमूसा'** का अर्थ शाम हो गई, होता है।

रोज़ेदार के आदाब

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोज़ेदार को कामुक बातें करने, संभोग करने, शोर व गुल करने, गाली बकने, गाली का जवाब देने से रोका है। अगर कोई गाली गलोज करे तो उस से कह दे कि **"मैं रोज़े से हूँ।"** (बुखारी एंव मुस्लिम)

इसकी व्याख्या में कहा गया है: वह अपनी जुबान से कहे गा।

तथा कहा गया है: अपने दिल में कहे गा अपने आप को रोज़े के बारे में याद दिलाते हुए।

एक कथन यह है कि: फर्ज़ रोज़े में अपनी जुबान से कहे गा, और नफ्ली रोज़े में अपने दिल में कहे गा; क्यों कि यह रियाकारी से बहुत दूर है।

रमज़ान के महीने में यात्रा के दौरान आप ﷺ का व्यवहारः

रमज़ान में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यात्रा किया, तो कभी आप ने रोज़ा रखा और कभी रोज़ा तोड़ दिया -रोज़ा नहीं रखा-, तथा सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को दोनों बातों का विकल्प दिया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दुश्मन से क़रीब हो जाते थे तो उन्हें रोज़ा तोड़ देने का आदेश देते थे; ताकि वह उन से लड़ाई करने पर शक्ति जुटा सकें।

लेकिन यदि यात्रा जिहाद से खाली होती थी तो अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रोज़ा तोड़ने के बारे में फरमाते : यह एक रूख्सत -छूट- है, अतः जो इसे अपनाए तो यह अच्छा है, और जो रोज़ा रखना चाहे तो उस पर कोई हरज नहीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सब से महान और सब से बड़े युद्ध : बद्र और मक्का पर विजय के युद्ध में -रमज़ान के महीने में- यात्रा किया।

यात्रा की वह मसाफत -दूरी- जिस में रोज़ेदार अपना रोज़ा तोड़ देगा, उस की सीमा निर्धारित करना पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा नहीं था। और न ही आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस के बारे में कोई चीज़ प्रमाणित है।

सहाबा किराम यात्रा का आरम्भ करते समय ही रोज़ा तोड़ देते थे, घरों को पार करने का कोई एतिबार नहीं करते थे। और इसी को पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा और सुन्नत बतलाते थे। जैसे कि उबैद बिन जब्र का कहना है: मैं अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी अबू बस्रह ग़िफारी के साथ रमज़ान के महीने में फुस्तात के एक कश्ती में सवार हुआ, तो हम ने अभी घरों को पीछे नहीं छोड़ा था कि उन्हों ने दस्तरख्वान मांगा और कहा, क़रीब आ जाओं। मैं ने कहाः क्या आप घरों को नही देख रहे? अबू बसरह ने उत्तर दियाः क्या तुम अल्लाह के रसूल की सुन्नत से मुंह मोड़ते हो? (अहमद, अबू दाऊद)

मुहम्मद बिन कअब ने कहा : मैं रमज़ान में अनस बिन मालिक के पास आया, जबकि वह यात्रा करना चाहते थे और उनकी सवारी तैयार खड़ी थी और उन्हों ने यात्रा का कपड़ा पहन लिया था। चुनांचे उन्हों ने खाना मंगाया और खाया। मैं ने कहाः यह सुन्नत है? उन्हों ने उत्तर दियाः सुन्नत है। फिर वह रवाना हो गए। (त्रिमिज़ी ने इसे हसन कहा है।)

सहाबा किराम के यह आसार इस बात को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि जिस ने रमज़ान के दिन के बीच में यात्रा आरम्भ किया है वो उस दिन में रोज़ा तोड़ सकता है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा था कि फज्र उदय होने के समय आप जुनबी होत थे। फज्र की अज़ान के बाद आप गुस्ल करते और रोज़ा रखते थे।

रमज़ान के महीने में रोज़े की अवस्था में आप अपनी किसी बीवी को चुंबन करते थे। और इसे आप ने पानी से कुल्ली करने के समान बताया है।[1]

भूल कर खाने या पीने वाले के बारे में आप ﷺ का व्यवहार

भूल कर खाने और पीने वाले के बारे में आप का व्यवहार यह था कि आप उस से क़ज़ा को समाप्त कर देते थे। क्योंकि अल्लाह तआला ने उसे खिलाया और पिलाया है, इस लिए इस खाने और पीने का संबंध उस से नहीं है कि जिस के कारण उस का रोज़ा टूट जाए। रोज़ा केवल उसी से टूटता है जिसे उस ने स्वयं किया हो। और ये तो उस के सोने की अवस्था में खाने पीने के समान है। जबकि सोने वाले, तथा भूलने वाले के कार्य का कोई मान नहीं है।

रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ें

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जिन चीज़ों के कारण रोज़ा टूटना शुद्ध रूप से प्रमाणित है वह : खाना, पीना, पछना लगवाना और उलटी -क़य- करना हैं।

तथा कुर्आन करीम से पता चलता है कि खाने और पीने के समान ही संभोग करने से भी रोज़ा टूट जाता है। इस में किसी का कोई मतभेद -इख्तिलाफ- नहीं है।

सुर्मा लगाने से रोज़ा टूटने के विषय में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ भी प्रमाणित नहीं है।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप रोज़े की अवस्था में मिस्वाक करते थे।

---

[1] उलमा ने रोज़ेदार के लिए बोसा देने को नापसंद किया है अगर उसे अपने ऊपर नियंत्रण -कंट्रोल- न हो।

तथा इमाम अहमद ने उल्लेख किया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रोज़े की अवस्था में अपने सिर पर पानी डालते थे।

तथा रोज़े की हालत में आप कुल्ली करते और नाक में पानी डालते थे। किन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोज़े दार को नाक में अधिक पानी डालने से रोका है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह प्रमाणित नहीं है कि आप ने रोज़े की हालत में पछना लगवाया है। यह इमाम अहमद ने कहा है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह भी प्रमाणित नहीं कि आप ने दिन के शुरू या अन्तिम हिस्सा में (रोज़ेदार को) मिस्वाक करने से रोका है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एतिकाफ का तरीक़ा

पैग़मबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमज़ान के अन्तिम दस दिनों में एतिकाफ किया करते थे यहाँ तक कि आप की मृत्यु हो गई। एक बार आप ने रमज़ान में एतिकाफ छोड़ दिया तो शव्वाल के महीने में उस की क़ज़ा की।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार रमज़ान के पहले दस दिनों मे एतिकाफ किया, फिर बीच वाले दस दिनों में, फिर अन्तिम दस दिनों में एतिकाफ किया। आप उस में लैलतुल-क़द्र तलाश करते थे। फिर आप को पता चला कि वह अन्तिम दस रातों में है तो आप ने बराबर उसी में एतिकाफ किया यहाँ तक कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से जा मिले।

- आप के लिए मस्जिद में एक खेमा लगा दिया जाता था जिस में आप एकान्त में अपने पालनहार की उपासना करते थे।
- जब आप एतिकाफ का इरादा करते तो फज्र की नमाज़ पढ़ कर खेमा में प्रवेश करते थे।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर साल दस दिन एतिकाफ करते थे। किन्तु जिस साल आप की मृत्यु हुई उस साल आप ने बीस दिन का एतिकाफ किया।
- हर साल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिब्रील के साथ एक बार कुर्आन को दोहारते थे। किनतु जिस साल आप की मृत्यु हुई दो बार कुर्आन को दोहराया।
- इसी तरह हर साल वह आप पर एक बार कुर्आन को पेश करते थे किन्तु जिस साल आप की मृत्यु हुई उन्हों ने दो बार आप पर कुर्आन को पेश किया।

- जब आप एतिकाफ करते तो अपने खेमे में अकेले दाखिल होते थे।
- जब आप एतिकाफ की हालत में होते थे तो अपने घर में केवल इन्सानी आवश्यकता ही के लिए प्रवेश करते थे।
- आप अपने सिर को मस्जिद से आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में निकाल लेते थे और वह माहवारी के दिनों में होने के उपरान्त भी आप के सिर को घोतीं और उसमें कंघी करती थीं।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ बीवियाँ आप के एतिकाफ गृह में भी आती थीं, जब वह उठ कर जाने लगतीं तो आप भी उन के साथ उठते और उन्हें वापस छोड़ते, यह रात में हुआ करता था।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एतिकाफ की हालत में अपनी औरतों से संभोग नहीं किया और न ही बोस व किनार (चुंबन) किया।
- जब आप एतिकाफ करते तो आप का बिस्तर और चारपाई आप के एतिकाफ गृह में रख दी जाती थी।
- जब आप किसी आवश्यकता के लिए निकलते तो रास्ते में किसी मरीज़ के पास से गुज़रते तो उस के पास न तो ठहरते थे और न ही उसकी बाबत पूछते थे।
- एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुर्की कुब्बा में एतिकाफ किया और उस के द्वार पर एक चटाई डाल दी; ये सारी चीज़ें इस लिए थीं ताकि एतिकाफ का उद्देश्य और उसका सार प्राप्त हो। ऐसा नहीं जैसाकि आज के जाहिल लोग करते हैं कि उन्हों ने एतिकाफ गृह को रहन सहन और दर्शकों को एकत्र करने और आपस में गप शप करने का स्थान बना लिया है। तो यह एतिकाफ कुछ और ही है और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एतिकाफ कुछ और ही तरह का था। और अल्लाह ही तौफीक़ देने वाला है।

والحمد لله رب العالمين وصلى الله وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين.

अनुवादक
(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
*atazia75@gmail.com